प्रकाशन की तिथि 01.12.2015

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

पं. लेखराम

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 38 अंक 12

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

दिसम्बर 2015 विक्रम सम्वत् 2072 मार्गशीर्ष-पौष

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011–23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

बलिदान दिवस (23 दिसंबर) के अवसर पर

खुला अमरता द्वार

प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया डी. लिट्.

जीवन मुशीराम का,
देता यह संदेश ।
गिरो उठो, गिर-गिर उठो,
उठना मुख्य हमेश ।।1।।

उठकर जागो, मत रुको,
बढ़ो लक्ष्य की ओर ।
सत् कर्मों में निरत हो,
छू लो अंतिम छोर ।।2।।

दयानन्द संसर्ग से,
जीवन का उत्थान ।
गर्हित पथ को त्याग कर,
मुंशी बना महान ।।3।।

सत्य, शौच, निष्ठा, लगन,
ईश्वर में विश्वास ।
श्रद्धा, सेवा, त्याग, तप,
से छूआ आकाश ।।4।।

सत् संगति, ईश्वर-भजन,
लोहा कुंदन होय ।
दृढ़ निश्चय, बलिदान से,
परमात्मा को जोय ।।5।।

वेद-सूर्य की ज्योति ले,
बढ़े सुपथ की ओर ।
मुंशी से श्रद्धा बने,
चले मोक्ष की ओर ।।6।।

दीक्षित हिन्दू धर्म कर,
किया शुद्धि का का ।
दलितों का उद्धार कर,
दिया आर्य का नाम ।।7।।

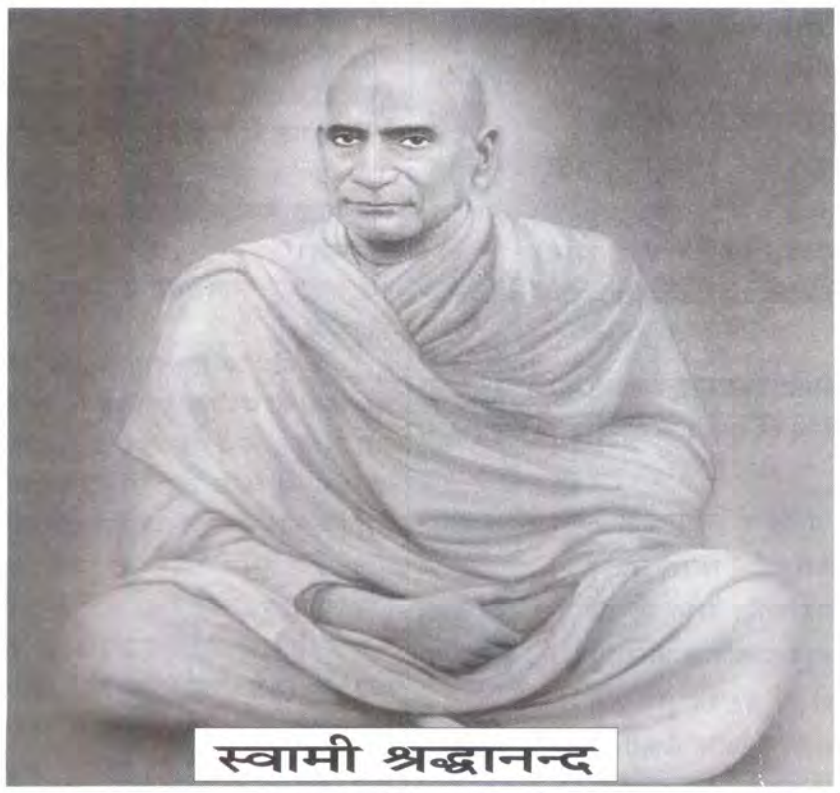
स्वामी श्रद्धानन्द

नारी शिक्षा के लिए,
किये प्रयत्न हज़ार ।
कन्या गुरुकुल खोल कर,
वेद-ज्ञान संचार ।।8।।

गुरुकुल शिक्षा के लिए,
न्योछावर सर्वस्व ।
हिन्दू-हिन्दी को दिया,
एक नया सर्चस्व ।।9।।

पत्रकारिता को दिये,
नये-नये आयाम ।
विधवा-पीड़ा को हरा,
नहीं किया विश्राम ।।10।।

जामा मस्जिद से किया,
मंत्रों का उच्चार ।
शुद्धि-हेतु बलिदान से,
खुला अमरता द्वार ।।11।।

त्याग और बलिदान से,
व्यक्ति अमर हो जाये ।
त्याग कुपथ सत्पथ चले,
श्रद्धानन्द कहाय ।।12।।

पुस्तक विमोचन एवं सम्मान समारोह

समाचार पेज 2 पर

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पुस्तक विमोचन एवं सम्मान समारोह

प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी द्वारा हिन्दी में लिखित एवं श्री हरबंसलाल कोहली जी द्वारा अंगेजी में अनुवादित पुस्तक **"शून्य से शिखर तक स्वामी श्रद्धानन्द"** नामक पुस्तक का विमोचन श्री आनन्द कुमार चौहान डायरेक्टर एमिटी शिक्षण संस्थान तथा ए.के.सी. ग्रुप ऑफ कम्पनी के कर कमलों द्वारा आर्य समाज रामकृष्णपुरम् सैक्टर–9, नई दिल्ली में रविवार दिनांक 01.11.2015 को हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रातः यज्ञ से हुआ और ओ३म् ध्वज श्रीमती संजना चौधरी जी (प्राभारी दुर्गावाहिनी) ने ध्वज गीत के साथ फहराया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मृदुला चौहान जी (आर्य नेत्री धर्मपत्नी श्री आनन्द कुमार चौहान जी) द्वारा की गयी। भजन–संगीत में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के बच्चों ने ओ३म् पर आधारित दो भजन प्रस्तुत किये तथा श्रीमती ऊषा चांदना जी ने मधुर संगीत से समा बांध दिया। इसके पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल वाले), डॉ. महेश विद्यालंकार जी, प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी, डॉ. अनिल आर्य, श्री अनिल शर्मा (पूर्व विधायक), श्री धर्म नारायण जी (धर्म प्रसार प्रमुख, विश्व हिन्दू परिषद्), श्रीमती प्रकाश कथूरिया जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर अपने–अपने विचार रखे, साथ यह भी बताया कि यह पुस्तक अंग्रेजी में इसलिए प्रकाशित की गयी है, ताकि स्वामी जी की जीवनी तथा आर्य समाज की विचारधारा का प्रसार विदेशों में भी हो सके। इन प्रवचनों से पहले श्री सुभाष आर्य (महापौर दक्षिणी दिल्ली नगर निगम) ने भी पधारकर आयोजन की शोभा बढ़ायी और आर्य समाज की विचारधारा का संदेश दिया।

इस अवसर पर 17 महानुभावों को शाल तथा चित्र द्वारा सम्मानित किया गया:–

1. श्री रामनाथ सहगल जी (वर्तमान प्रधान भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा)
2. श्रीमती उमा बजाज जी (इनके पिताजी स्वर्गीय द्वारकानाथ सहगल जी शुद्धि सभा के कई वर्षों तक प्रधान रहे)।
3. श्री विजय बत्रा जी (इनके पिताजी स्वर्गीय रामभज बत्रा जी शुद्धि सभा के कई वर्षों तक प्रधान रहे और वैदिक साहित्य के प्रकाशन में श्री बत्रा का बहुत सहयोग है)।
4. श्री सुभाष चांदना जी (इस पुस्तक की छपाई के लिए राशि प्रदान की है और बिना मांगे आर्थिक सहायता धार्मिक कार्यों में प्रदान करते रहते हैं)।
5. प्रो. डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी (यह शुद्धि सभा के उपप्रधान हैं और इन्होंने 70 से ऊपर पुस्तकें लिखकर उनका प्रकाशन करवा चुके हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर हिन्दी में लिखी हुई, इनकी पुस्तक हैं)।
6. श्री चन्द्रभान चौधरी जी (यह शुद्धि सभा के संरक्षक हैं और पिछले कई वर्षों से शुद्धि सभा के लिए हर माह दान एकत्रित करते हैं)।
7. श्रीमती ललिता निझावन जी (इनके पिताजी स्व. श्री राजेश्वर जी ने अपना सारा जीवन एवं धन शुद्धि के कार्य के लिए अर्पण किया। इस समय श्रीमती निझावन जी ब्रिटिश एयरवेज की उच्च अधिकारी हैं)।
8. श्री रवि चौधरी जी (सेवा अवकाश आई.जी.) पुलिस तथा सुरक्षा के मामलों में परामर्शदाता रहे हैं।
9. प्रो. शशि तिवारी जी (यह वर्ल्ड वैदिक स्टडी संस्था की कई वर्षों से महामन्त्री के नाते वैदिक प्रचार के कार्य में लगी हुई हैं)।
10. श्री हरबंस लाल कोहली जी (श्री कोहली जी सन् 1942 के आन्दोलन के स्वतन्त्रता सेनानी है।
11. श्री एस.पी. सिन्हा – यह दक्षिणी दिल्ली पेन्सनर समाज के महामन्त्री हैं।
12. श्रीमती महेश्वरी हाण्डा–अवकाश प्राप्त पोस्ट मास्टर जनरल।
13. श्री अजय सहगल – सम्पादक टंकारा समाचार।

इस कार्यक्रम का संचालन श्री चतर सिंह नागर जी ने किया और श्री सूर्यपाल सिंह जी मन्त्री आर्य समाज रामकृष्ण पुरम् सैक्टर–9 ने सभी का स्वागत, और श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा महामंत्री शुद्धि सभा ने सभी धन्यवाद किया।

– सम्पादक डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

अनुपमेय गोमाता

परमात्मा ने जब सृष्टि को बनाया तो यहाँ रहने वाले मनुष्यों सहित सभी प्राणियों के उचित भरण–पोषण तथा उनके द्वारा उत्सर्जित (मल मूत्रादि) पदार्थों के विसर्जन तथा पुनर्नियोजन से उन्हें उपयोगी बनाने की व्यवस्थाएँ की, ऐसा संकेत यजुर्वेद के निम्न मंत्र में दिया गया है–

यत् पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः
शरद्धविः।। यजु. 31.14 ।।

"परमात्मा ने यज्ञ (निष्काम कर्म) के द्वारा सृष्टि का निर्माण किया तथा देवताओं (पृथ्वी, जल, वायु, तेज तथा आकाश) ने परमात्मा द्वारा आरम्भ किये यज्ञक्रम को निरन्तर रखा। इस यज्ञ में वसन्त ऋतु धृत है, ग्रीष्म ऋतु इंधन तथा शरद ऋतु हव्य सामग्री।" अर्थात् ऋतुचक्र चलना यज्ञ का नैरन्तर्य है जिसके कारण ही सृष्टि के सभी प्राणियों का पालन होता रहता है। इस यज्ञ में गाय की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण है–

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तुते सदाऽनघे।।

गाय उपरोक्त सभी देवताओं की माता है क्योंकि गाय के घी से ही यज्ञ होता है, गाय के गोबर उपले इंधन के रूप में काम लेने से अधिकतम ऊर्जा तथा न्यूनतम कार्बन उत्सर्जन होता है। हवन की राख जल का निसंक्रमण करती है तथा खेतों में खड़ी फसल में डालने से कीटाणुरोधक का कार्य करती है। यज्ञ (हवन) की अग्नि से प्रदूषित वायु रासायनिक परिवर्तन द्वारा निरापद बनती है। घृत के कण मिश्रित धूम्र वर्षाजल के बादलों को आकर्षित करते हैं। वेदमंत्रों के यज्ञ के समय सस्वर पाठ से आकाश तत्त्व (जिसका सम्बन्ध मनुष्य के मन से होता है) की शुद्धि होती है अर्थात् आकाश में विभिन्न प्रकार की प्रदूषित कर्कश ध्वनियों का वेदमंत्रों की तरंगों की गूंज से शमन हो जाता है। दूसरी ओर गाय को कष्ट दिया जाता है या उसका वध किया जाता है तब उत्पन्न उसके आर्त स्वर से भूकम्प आदि उत्पात पृथ्वी पर होते हैं, ऐसा वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है। इस प्रकार पाँचों जड़ देवताओं (पृथ्वी, जल, वायु, आकाश तथा तेज) की शुद्धिकारक तथा पोषक होने से गाय देवताओं की माता कही गई है। गाय का दूध पोषक के साथ–साथ रोग प्रतिरोधक है, गाय का मूत्र दिव्य ओषधि है तथा गाय का गोबर भूमि के लिये सभी आवश्यक पोषक तत्त्वों से युक्त स्वाभाविक भोजन होने के साथ औषधीय गुणों से युक्त भी है। गोमय के लेप से सभी प्रकार के चर्मरोग ठीक होते हैं तथा गोमय (गोबर) मनुष्य की आन्त्र में से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने की क्षमता रखता है। इस प्रकार गोमाता अपने आपमें एक तीर्थ ही नहीं सभी तीर्थों से भी श्रेष्ठ महातीर्थ है। ऐसी गाय जो स्वयं निष्पाप है को माता कहने में क्या अतिशयोक्ति हो सकती है। जो गाय–बैल दूध नहीं देते तब भी गोमूत्र तथा गोबर के रूप में अपना बहुमूल्य योगदान कृषि तथा पंचगव्य औषधियों के रूप में मानव समाज के लिये करते हैं। रासायनिक खाद का प्रयोग करने पर फसलों पर हानिकारक कीटों का प्रभाव अधिक होता है, अधिक खाद अधिक कीटनाशक इस चक्र से भूमि की उर्वरकता समाप्त हो जाती है। कुछ समय पूर्व बंजर चाय बागानों की भूमि के स्वामियों ने स्थानीय गोपालकों से समझौता कर उन्हें गायें उपलब्ध कराई तथा कहा कि दूध तुम्हारा (गोपालक का) तथा गोबर–गोमूत्र हमारा। इस गोमूत्र तथा गोमय से चाय बागानों की भूमि सोना उगलने लग गई। ऐसी कल्याणकारी गोमाता का वध करने का कोई भी बुद्धिमान मनुष्य कैसे सोच सकता है? इसलिये वेदादि आर्षग्रन्थ गाय की महिमा से भरे पड़े हैं तथा उसको अवध्य कहना निश्चित ही एक दूरगामी लोक कल्याणकारी सोच है–

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रनु वोचं चिकितुषे जनाय मा
गामनागामदितिं विधिष्ट।

ऋग्वेद 8.101.15 ।।

"गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री तथा आदित्यों की बहिन है। इस गाय में सभी देवगण निवास करते हैं। इसमें दूध रूपी अमृत है अतः गाय सब प्रकार से पूज्य है। इसी कारण गाय वध करने योग्य नहीं है। जो प्राणियों में सबसे अधिक सरल गाय का वध करता है, वह पाप करता है। गाय की हर प्रकार से रक्षा करनी चाहिये।"

देवस्य पश्य काव्यम्

–उत्तम चंद शरश

वेद परमेश्वर की अमर वाणी है, परमेश्वर आदि कवि है **"कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः।"** (य.40.8।) अतः वेद परमेश्वर का काव्य है। वैसे तो यह भौतिक जगत् उस स्रष्टा का सुन्दर काव्य ही है। प्रातः काल में उषा की अरुणिमा, बाल सूर्य का धीमी गति से आगमन, पुष्पों का सुवासित होकर बाल सूर्य का स्वागत सायं काल की स्तब्धता, रात्रि का सितारों का थाल सजा कर अपने पति चन्द्रमा को आरती उतारना, चन्द्रमा का यौवन माता धरती के हृदय (समुद्र) का ज्वार, न जाने किस किस रूप में उस कवि के काव्य का दर्शन, खुले नेत्रों से मनुष्य करता है।

गुलशन में फिरूं कि सैरे सहरा देखूं?
या कोहो दश्तो दरिया देखूँ
हरजां तेरी कुदरत के हैं लाखों जल्वे
हैरान हूँ दो आंखों से क्या–क्या देखूं?

यह तो रहा कवि का दृश्य काव्य, आइये उसके श्रव्य काव्य पर भी दृष्टि डालें।

वेद का प्रत्येक मन्त्र काव्य के रस से स्निग्ध है। वहां ईश्वर का वर्णन हो अथवा जीव का , सूर्य की महिमा कही गई हो अथवा उषा की, काव्य की सरसता शब्द–शब्द में मिलती हैं। मनुष्य संसार की चमक–दमक में खो जाता है। संसार के रचयिता की ओर उसका ध्यान नहीं जाता। देखिये, वेद इसे किस सुन्दर प्रकार से व्यक्त करता है, **"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम् मुखम्।"** (य.40.17) उस सत्य (ईश्वर) का स्वरूप स्वर्णमय पात्र से ढका हुआ है। 'व्यक्ति के नेत्र इस स्वर्णिम पात्र की चमक दमक में ही चुन्धिया जाते हैं अतः वह पात्र के नीचे छुपे सत्य के दर्शन नहीं कर सकता। प्रकाश तो मानव को चाहिए, परन्तु इतना नहीं कि नेत्र ही बन्द हो के रह जाते। इसी भाव को उर्दू के कवि ने इन शब्दों में दिया,

"बर्क के लैम्प से आंखों को बचा ले अकबर
रोशनी मिलती है पर नूर चला जाता है

इस संसार को लोग भव सागर कहते हैं। इस उपमा का आरम्भ वेद के निम्न मन्त्र से हुआ लगता है।

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्रतरता सखायः। अत्रा जहीम ये असन्नशेवाः शिवान् वयमुत्तरेमाभि वाजान्। ऋ. 10.53,8।।

भाइयो! यह (संसार) पत्थरों से भरी नदी चल रही है। एक–दूसरे को पकड़ कर के चलो, निराशा को त्यागो और इस सागर को तैरो। पापों के बोझ को उतार फैंकों। "संसार सागर का क्या सुन्दर चित्रण है, तैरने की कला से परिचित व्यक्ति इस में डूबता नहीं और तैरने वाले को बोझ भी नहीं रखना चाहिए मन्त्र के भाव की गम्भीरता, कवि हृदय को उद्वेलित कर देती है।

दिन और रात अपने समय पर आते हैं। देव इस का चित्रण काव्यमय रूप में प्रस्तुत करता है। उषा तथा रजनी दो बहिन हैं, दोनों का रूप अलग–अलग है दोनों अपने समय पर आती हैं, रास्ता भी दोनों का एक ही है पर आपस में दोनों बहिनें मिल नहीं पातीं–वेद के शब्द देखियेः–

समानोऽध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे। न मेथेते न तस्थतु सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे। (साम. उ. 1751) भिन्न–भिन्न रूप वाली दो बहिनें (रात्रि तथा उषा) परमेश्वर के शासन में समान मार्ग से चल रही हैं, पर दोनों मिल नहीं पातीं।

"यूं तो हम एक ही बस्ती में बसा करते हैं। फर्क इतना है मुलाकात नहीं होती है। "उषा रात्रि की बहिन है अतः बहिन के कार्य को तो कर ही देती है।

"उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनं सुजानता। (अथर्व. 19,12,1) उषा अपनी बहिन (रात्रि) के तम को हटा देती है। जीव को संसार में ईश्वर की प्राप्ति के लिए कहीं जाना आना नहीं, वह तो व्यापक है फिर भी जीव उससे दूर होकर दुःखी है। वेद इसे एक रूपक में प्रस्तुत करता है। सहृदय पाठक इसे पढ़ें और आनन्द लें।

"अपांमध्ये तस्थिवांसं तृष्णा विदज्जरितारम्। मृडा सुक्षत्र मृडय। (ऋ.7,89, 4)।

साधक जल के मध्य में खड़ा है, परन्तु व्यास से व्याकुल है, कितना सुन्दर प्याचत्रण है, मनुष्य की दयनीय दशा का? सम्भवतः इसी भाव को कबीर ने अपने शब्दों में कहा है–

जल में मीन प्यासी, मोहे देखत आवे हांसी?

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कवि स्व. शरर जी ने भी यह भाव अपने शब्दों में कहे हैं। 'आनंद स्रोत बह रहा है और तू उदास है। अचरज है, जल में रह के भी मछली को प्यास है। लेख लम्बा हो रहा है अतः बिना व्याख्या के पाठक वेद के इन मन्त्रों में काव्य की छटा देखें–

द्वे रूपै चरतः स्वर्थेऽन्यान्या वत्समुप धापयेते। (य. 33।5)

भिन्न–भिन्न रूप वाले रात्रि, दिन वर्तमान हैं, एक संसार रूप बालक को दुग्धादि पिलाते हैं। (दयानन्द सरस्वती)

शरीर रूपी अयोध्या नगरी का सुन्दर वर्णन देखिये–

अष्टा चक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या। तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्ग्यो ज्योतिषवृतः।
(अथर्व. 10।2।31)

वेद की प्रश्नोत्तर शैली भी द्रष्टव्य है–

कः स्विदेकारी चरति क उ जायते पुनः।
किं स्विद्विमस्य भेषजं कि स्विदावपनं महत्?

अकेला कौन विचरता है? कौन बार–बार प्रकट होता है? शीत का औषध क्या है? और बड़ा बीज बोने का स्थान कौन सा है? चार प्रश्न किये हैं। उत्तर दूसरे मंत्र में वेद इन शब्दों में देता है–

सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः। अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्।। (य.23।9।10)

सूर्य अकेला अपनी कक्षा में चलता है। चन्द्रमा बार–बार उत्पन्न होता है अग्नि शीत की दवाई है और धरती बोने का बड़ा स्थान है।

काव्य का सौन्दर्य पदे–पदे मिलता है। सहृदय पाठकों के लिए यह लेख जिज्ञासा बढ़ाने का कार्य कर पाए तो लिखना सफल है। ईश्वर सब से बड़ा कवि है सृष्टि काव्यमय है, वेद सरस काव्य है। आर्यसमाज का यह सौभाग्य है कि वह वेद के इस सरस काव्य से सहृदय व्यक्तियों को रस प्रदान कर रहा है।

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी दयानन्द का प्रभाव निराला था,
मुन्शीराम से बन गया महात्मा था।
शराब छोड़ी और छोड़ा था कबाब,
मुन्शीराम का जीवन बन गया लाजवाब।।

वकालत को ठुकराया, श्रद्धानन्द कहलाया,
हरिद्वार में उसने गुरुकुल चलाया।
अपने दोनों बेटों को पहले प्रविष्ट किया,
दान मांग–मांग कर यह गुरुकुल चलाया।।

अपनी कोठी बेची और बेचा प्रेसखाना,
सब कुछ लगा दिया, था गुरुकुल चलाना।
एक बार नेहरू जी का हुआ था वहाँ जाना,
अपने ब्रह्मचारियों को बताया तोपखाना।।

श्रद्धानन्द ने टाऊन हाल पर सीना ताना,
अंग्रेजी पुलिस को था धता बताना।
जामा मस्जिद से श्रद्धानन्द था बोला,
सच्चाई से न वह कभी था डोला।।

जुनून था विधर्मियों को वैदिक धर्मी बनाना,
स्वामी श्रद्धानन्द का लक्ष्य अछूतोद्धार कराना।
दुर्भाग्य था देश का मुस्लिम ने उसको मारा,
वैदिक धर्म के लिए जीवन लगाया सारा।।

आर्य समाज का सदा नाम रोशन किया,
स्वामी दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाया।
स्वामी श्रद्धानन्द साहस की था मूर्ति
समूचे भारत में छाई है उसकी कीर्ति।।

हर वर्ष पच्चीस दिसम्बर को याद करते हैं,
उसके बलिदान पर जुलूस निकालते हैं।
सचमुच में श्रद्धानन्द श्रद्धा की मिसाल था,
सेवाराम वह भारत माँ का सच्चा लाल था।।

–सेवाराम आर्य
आर्य समाज नजफगढ़, नई दिल्ली

वैदिक आध्यात्म विज्ञान

– इन्द्रराज

वेद में कई स्थानों पर दार्शनिक तत्त्वों का विश्लेषण करते हुए आत्म मीमांसा की प्रेरणा पाई जाती है। जो लोग आत्मविज्ञान को कुछ भी महत्त्व ने देकर इधर–उधर की बातों में जीवन लगा देने को ही परम पुरुषार्थ मान बैठते हैं। उन की भ्रांत धारण को दूर करने तथा युग–युगांतर से प्रसुप्त जिज्ञासा को जागृत करने के लिए भगवान् वेद अनेक मंत्रों के द्वारा उपदेश देते हैं। एक मंत्र के स्फूर्ति–दायक वचनों पर ध्यान दीजिए।

को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति। भूम्या असुरसृगात्मा क्वस्वित् को विद्वांस–मुपगात् प्रष्टुमेतत्।।

ऋ. 1।134।4

(1) **कः प्रथमं ददर्श**– किसने शरीर की उत्पत्ति से भी पूर्व विद्यमान रहने वाले आत्मा को देखा अर्थात् दृढ़ निश्चयपूर्वक जान लिया कि यह जीवात्मा पहले ही वर्तमान था और शरीर की रचना का उपक्रम बहुत पीछे की घटना है। इस आत्मा की विचित्र और आश्चर्यकारिणी शक्ति को देखो कि यह अनादि और अविनाशी आत्मा–

(2) **यत् अनस्था जायमानम् अस्थन्वन्तं बिभर्ति**– स्वयं तो अस्थि से रहित है परन्तु उत्पन्न होने वाले शरीर को अस्थियों से भरपूर कर देता है और दिन प्रतिदिन शरीर का पालन–पोषण करके उसको सुदृढ़ और बलवान् बना देता है, जैसे कोई भवन खम्भों पर खड़ा होता है, वैसे ही हमारा शरीर अस्थि–पिंजर पर खड़ा है। उत्पत्ति के समय से लेकर अस्थियों का स्तम्भ भी उन्नत होता रहता है और शरीर के अंग–प्रत्यंग भी समुन्नत होते रहते हैं। यह सब जीवात्मा की ही महिमा है, परन्तु आश्चर्यजनक बात यह है कि जीवात्मा स्वयं तो इतना सूक्ष्म है कि उस के स्वरूप में अस्थि का लेशमात्र भी नहीं और शरीर अस्थियों से भरपूर है।

मंत्र में संकेत किया है कि शरीर को अस्थन्वन्तम् अर्थात् अस्थियों से बलिष्ठ बनाने वाला शरीर से सर्वथा पृथक् है जो शरीर को बिभर्ति पालन–पोषण द्वारा हृष्ट पुष्ट करता है, 'बिभर्ति' क्रिया का कर्ता कोई और ही तत्त्व है जो शरीर की वृद्धि का मुख्य कारण है। यदि शरीर से पृथक् कोई चेतन आत्मा न होता तो शरीर की उत्तरोत्तर वृद्धि कदापि न हो पाती परन्तु होती है। यही कारण है कि आत्मा के न रहने पर मृतक शरीर की किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होती क्योंकि वृद्धि करने वाला यहां से चला जाता है।

कई लोग विचार किया करते हैं कि–

(3) **असुः असृक् भूम्याः** – 'प्राण और रक्त' ये तो भूमि अर्थात् पंचभूतों के उपादान से बनते हैं और ये ही शरीर में जीवन के कारण हैं। इन से पृथक् आत्मा नाम का कोई तत्त्व नहीं है। हमारे शरीर के निर्माण में प्राण और रक्त का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है और बाह्य दृष्टि से यही दो तत्त्व शरीर की अभिवृद्धि और स्थिति के प्रधान कारण भी प्रतीत होते हैं, परन्तु ये तो कार्य हैं और इन के कारण पृथ्वी आदि पंच महाभूत हैं। अतः यह तो समझ में आ सकता है कि पंचभूतों के कार्य अन्न जलादि से प्राण और रक्त की उत्पत्ति होकर शरीर की रचना, बृद्धि और पुष्टि होती है उसी हेतु शरीर अन्नमय रक्तमय है।

परन्तु शरीर केवल प्राण, रक्त, मांस और अस्थि आदि पांच भौतिक तत्त्वों के संघात ही का नाम नहीं है, शरीर में कोई जीवित जागृत तत्त्व भी है। जब शरीर एक जीता जागतता मांस का पुतला है तो जीवन कहां से आया? इस प्रश्न का उत्पन्न होना भी स्वाभाविक है। अतः मंत्र कहता है यह भी विचार करो कि–

(4) **आत्मा क्वस्वित्** – शरीर में जीवन की ज्योति जगाने वाला, अनेक क्रियाओं का संचालक और अनन्त प्रेरणाओं का प्रेरक 'आत्मा' कहां से आया? इस जीवन का कारण कौन है? क्या प्राण और रक्त आदि के समान जीवन तत्त्व का भी पृथ्वी आदि पंचभूत ही कारण हैं अथवा उस तत्त्व की कोई अपनी स्वतंत्र सत्ता है और यह आत्मा तत्त्व किसी भी उपादान से उत्पन्न नहीं है। मंत्र ने कहा है कि शरीर को यथार्थतया समझने के लिए शरीर के मूल तत्त्वों पर दृष्टि डालनी चाहिए। शरीर की स्थिति से प्रतीत होता है कि शरीर एक अस्थि–पिंजर है। इस अस्थिपिंजर में प्राण और रक्त का संचार हो रहा है और इस संसार से जीवन–लीला चल रही है, परन्तु इस पुतले में कोई 'आत्मा' नाम का अभौतिक तत्त्व भी विराजमान है जो इस शरीर से, इस शरीर की क्रिया से और इस शरीर के किसी उपादान से या मूल कारण से उत्पन्न नहीं हुआ है किन्तु उस की उत्पत्ति होने के समय से बहुत पहले ही विद्यमान था। इसलिए मंत्र ने उसे 'प्रथम' कहा है। यह शरीर के अन्दर है और अन्दर रहकर शरीर का 'बिभर्ति' अर्थात् पालन–पोषण करता रहता है। देख लीजिए जब यह पालक, पोषक, जीवनदायक तत्त्व शरीर से निकल जाता है तो तत्क्षण जीवन के चिन्ह समाप्त हो जाते हैं, यह पालनकर्ता, पोषणकर्ता और जीवनदाता शरीर में कहीं से आता है और किसी स्थान को फिर प्रस्थान कर जाता है, आत्मा की इस उत्क्रांतिगति और अजीत के भाव को स्पष्ट करने के लिए मंत्र ने क्वस्वित् अर्थात् कहां से तथा कहीं न कहीं से अवश्य आता है। इस शब्द का प्रयोग किया है, मंत्र ने उस आने जाने वाले और शरीर के भरण–पोषण करने वाले अविनाशी अभौतिक तत्त्व का शुभ नाम भी बता देने की कृपा की है। शरीर की बजर भूमि के हरा भरा करने वाले हाड़–मांस तथा रक्त के बने अपवित्र पुतले को जीवनामृत प्रदान कर पवित्र करने वाले तथा इस जड़ शरीर की सूनी बस्ती के कण–कण में ज्योति को जगा कर चकाचौंध कर डालने वाले का नाम आत्मा है आत्मा।

आत्मन् शब्द का अर्थ भी बड़ा विचित्र है। ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने इस तत्त्व को जैसा पाया वैसा ही इस का नाम रखा है। निरुक्ताचार्य महर्षि यास्क ने आत्मन् का निर्वचन करते हुए लिखा है कि –

आत्मा अततेर्वा व्याधिकर्षणः। निरुक्त

उस का नाम आत्मन् इसलिए है कि यह सदा ही एक शरीर में निवास नहीं करता किन्तु एक को छोड़ दूसरे में और दूसरे को छोड़ तीसरे में तथा तीसरे को छोड़ चौथे शरीर में जाता है और इस प्रकार निरंतर घर बदलता रहता है। इसके आत्मन् नाम रखने का दूसरा कारण यह भी है कि यह जब शरीर में प्रवेश करता है तो तत्काल शरीर के प्रत्येक अंग को गतिमान् कर देता है और जब तक शरीर में रहता है तब तक लगातार गति देता रहता है जिस से शरीर की अभिवृद्धि होती रहती है। इस तत्त्व को आत्मन् इसलिए भी कहा जाता है कि यह तत्त्व जब शरीर में प्रवेश करता है तो उसी समय शरीर के कण–कण में जीवन ज्योति फैल जाती है और शरीर का कोना–कोना जगमगा उठता है और जब तक शरीर में रहता है तब तक अपनी उस नगरी को जीवन ज्योति से प्रकाशित किये रहता है।

यह जीवन ज्योति का प्रकाश करने वाला, शरीर के कोने–कोने को जागृत रखने वाला और निरंतर गति करते रहने वाला अभौतिक आत्मा कहां से आता है और क्यों आता है तथा कब से आता है और कब तक शरीरों में आवागमन करता रहेगा? इस प्रकार के अनेकों प्रश्न हैं जिन पर विचार करना परमावश्यक है परन्तु दुःख और आश्चर्य की बात है कि–

एतत् प्रष्टुम् कः विद्वांसम् उपगात् – इन बातों को पूछने के लिए कौन जिज्ञासु है जो आत्मज्ञानी विद्वान् के पास पहुंचा हो। अध्याम विद्या के प्रश्न आत्मज्ञानी विद्वान् के पास जाकर ही करने चाहिए और वही इस प्रकार की कठिन समस्याओं का सरलतया समाधान कर सकता है परंतु वह जिज्ञासा सर्वसाधारण के मस्तिष्क में नहीं उपजती और न ही प्रत्येक विद्वान् इन गुत्थियों को खोल सकता है। इसके लिए तो पूछने और बताने वाले दोनों असाधारण होने चाहिए। कठोपनिषद् के शब्दों में–

आश्चर्योऽस्य वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः। कठो. द्वितीय वल्ली 6

अर्थात् इस आत्मज्ञान का (वक्ता) वक्ता (आश्चर्यः) कोई विरला ही होता है (अस्य) इसका (लब्धा) पाने वाला (कुशलः) कोई प्रवीण ही होता है (कुशलानुशिष्टः) प्रवीणव पुरुष से उपदेश पाया हुआ (ज्ञाता) जानने वाला (आश्चर्यः) कोई विशेष ही होता है।

भगवती श्रुति इस आत्मा को सद्गुरु से जानने के लिए उत्प्रेरित कर रही है। यह आध्यात्मिक विज्ञान कोई आध्यात्म में डूबा हुआ मर्मज्ञ ही बता सकता है परन्तु पूछने वाला तो होना चाहिए। वेद कहता है इस आत्म तत्त्व को पूछने के लिए कौन किसी आत्मज्ञानी के पास जाने का उपक्रम करता है।

पुनः कठ मुनि यमाचार्य के मुख से नचिकेता को समझाते हुए सारे संसार के आत्मजिज्ञासुओं को सम्बोधित करते हैं–

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

कठो. तृतीय वल्ली 14

ऐ जन्म–जन्मान्तरों से मोह निद्रा में सोए हुए जिज्ञासुजनो! "उतिष्ठत" उठो, केवल उठो ही नहीं अपितु "आग्रत" जागो और ब्रह्म को जानने वाले योग्य विद्वानों के पास जाकर उस आत्मतत्त्व को जानो। निश्यच ही यह आध्यात्मिक मार्ग छुरे की धार के समान कठिन है। केवल सूक्ष्मदर्शी कवि, मनीषी लोग ही इस कठिनता से प्राप्त होने वाले आत्मतत्त्व को बता सकते हैं।

आइए, वैदिक आध्यात्म के इस रहस्य को किसी आत्मदर्शी से पूछ कर और उसे जानकर आना एवं विश्व का कल्याण करें।

ऋषियों की तेजस्वी परम्परा में दयानन्द

– डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

ऋषियों ने जिस संस्कृति के दर्शन किए वही विश्व-वरणीय संस्कृति पूर्वकाल में सर्वश्रेष्ठ थी और आज भी है–

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा

ऋषियों ने जिन धर्मों का साक्षात्कार किया वे देश और काल के सांचे में सीमित नहीं हैं। वे तो विश्व के सनातन प्रवाह में ओत-प्रोत ऐसे नियम हैं जो सृष्टि के और मानव-जीवन के आधार-भूत हैं। यह समस्त सृष्टि महती रहस्यमयी प्रक्रिया है। इस रहस्य को जो अपने ज्ञान-चक्षु से जान लेता है वही ऋषि है। किन्तु केवल बुद्धि से जान लेना ही पर्याप्त नहीं है। जान लेने का अर्थ है कि जाननेवाला वैसा ही बन जाता है, वह अपने ज्ञान को जीवन में ढाल लेता है– **य एवं वेद स एवं भवति**। ज्ञान एवं कर्म जिस बिन्दु पर मिलते हैं वही ऋषित्व के उदय का बिन्दु है।

ऋषियों की महती परम्परा

वशिष्ठ विश्वामित्र, वामदेव, गौतम, भरद्वाज, भृगु, अंगिरा। आदि अनेक ऋषियों की महती परम्परा के द्वारा वेदविद्या का प्रचार हुआ। उसके फलस्वरूप मूल वैदिक संहिताएं, शाखाएं, अनेक ब्राह्मण, उपनिषद्, आदि प्राचीन वांड्मय का जन्म हुआ। अनेक ब्रह्मषि, ऋषि, महर्षियों द्वारा वेदविद्या की परम्परा का अनंत विस्तार भारतीय संस्कृति में पाया जाता है। सचमुच आज भी जितना उपलब्ध है, जब उस साहित्य की समृद्धि पर हम विचार करने लगते हैं तो हमें आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। याज्ञवल्क्य, जैमिनी, शौनक, यास्क आदि आचार्यों ने मूलभूत वेदविद्या का ही अपने ज्ञान की समाधि से बहुविध व्याख्यान किया है। उसी तेजस्वी परम्परा में सहस्त्रों वर्ष बाद महर्षि दयानन्द हुए।

गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर ऋषि दयानन्द ने उसी ज्ञान-नेत्र को प्राप्त किया जिसे आर्ष-चक्षु कहते हैं और जिस का प्रधान लक्षण धर्म-तत्त्व का साक्षात्कार है। जो अमृत की धारा वैदिक साहित्य और संस्कृति में प्रवाहित हुई थी। उसी का सतत पान ब्रह्मचारी दयानन्द ने अपने आचार्य के चरणों में बैठ कर किया। **अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। अमृतापिधानमसि स्वाहा। सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा**– इन प्रतिज्ञाओं के साथ ऋषि दयानन्द ने अपने प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द से दीक्षा ग्रहण की। **अमृतस्य देव धारणो भूयासम्** – हे देव, मैं अमृत का धारण करने वाला बनूँ। इस भावना के साथ उन्होंने अपना जीवन-सत्र आरम्भ किया और जब तक वे इस लोक में रहे, उन के जीवन की यही श्रद्धा थी कि किस प्रकार ऋषि संस्कृति के उस अमृत जल से भारतीय संस्कृति एवं विश्वमानव-संस्कृति को अधिक से अधिक प्रोक्षित कर सकें।

ऋषि दयानन्द की वैदिक श्रद्धा

ऋषि दयानन्द ने वेद के लिए जो कुछ किया उस ऋण से उऋण होना सम्भव नहीं। वेद शब्द में आज जो इतनी शक्ति भर गई है, वेदविद्या की जो तेजस्विता राष्ट्रीय मानस में पुनः प्रतिष्ठित हुई है, उस का अधिकांश श्रेय भगवान् दयानन्द को है। उन्होंने अपने जीवन में राष्ट्र-निर्माण और लोकोपकार के अनेकों कार्य किए। स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वराज्य इन कल्याणों का दर्शन दयानन्द के ज्ञान-चक्षु में पाया जाता है। किन्तु, इन सब से महत्वपूर्ण और स्थायी उन का दर्शन वेदों के विषय में था। जितनी सत्य विद्याएं हैं, वेद उन का स्रोत है– इस प्रकार का कथन दयानन्द के ज्ञान का मथा हुआ मक्खन है।

100 वर्ष पूर्व इस प्रकार की उक्ति के लिए अत्यन्त साहसपूर्ण चिंतन और आत्मविश्वास की आवश्यकता थी। मध्यकालीन आचार्य प्रायः गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्रों पर रुक जाते थे। किन्तु प्रस्थानत्रयी के भी उस पार जो वेद का लहराता हुआ ज्ञान-समुद्र है वहां तक पहुंचने के लिए जो बीच की खाई थी उस के पार जाने का कौशल और आग्रह दयानन्द ने ही किया। जो इस प्रकार अंधकार के पार देख लेता है और जो जमी हुई काई को हटा देता है उसे ही छान्दोग्य उपनिषद् में 'स्कन्द' इस महती पदवी का अधिकारी कहा गया है –

तदस्मै मृदितकषायाय तमसस्पारं दर्शयति भगवान् सनत्कुमारः। तं स्कन्दं इत्याचक्षते। (छा. 7।26।2)

आज यह कहते हुए आनन्द का अनुभव होता है कि वेद के विषय में ऋषि दयानन्द सच्चे अर्थो में स्कन्द थे। जिन्होंने अंधकार के उस पार वेद की महिमा का दर्शन प्राप्त किया और वेद की पुनः प्रतिष्ठा के लिए सच्चे सेनानी की भांति जीवनभर संघर्ष किया। ऋषि दयानन्द की ज्ञानाग्नि विश्व के मूलभूत अक्षर-तत्त्व का अद्भुत उदाहरण है। इस अवसर पर उन के प्रति हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अध्ययन एंव अध्यापन

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसार दुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः।।

जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता है, सुन्दर शील स्वभावयुक्त, सत्यभाषण आदि नियम पालक युक्त और जो अभिमान अपवित्रता से रहित, अन्य की मलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारी जनों के दुःखों को दूर करने से सुभूषित, वेदविहित कर्मों से पराये उपकार करने में रहते हैं वे नर और नारी धन्य हैं। इसलिए आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हों उनसे शिक्षा न दिलावें। किन्तु जो विद्या युक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं दिव्ज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवित और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्यकुल अर्थात् अपनी अपनी पाठशाला में भेज दें। विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लडके ओर लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए, जो वहाँ अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य, अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पाँच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पाँच वर्ष की लड़की भी न जाने पावें। अर्थात् जबतक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें, तबतक स्त्री वा पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्तसेवन, भाषण, विषयकथा, परस्परक्रीडा, विषय का ध्यान और संग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रखें।

–रोनक कुमार शास्त्री

समाजों का सरताज

समाजों का सरताज यही है,
जन-जन की आवाज़ यही है।
प्रिय है हमको आर्यसमाज,
अमर रहेगा आर्यसमाज।।
वेद ज्ञान की पावन गंगा,
बहा रहा है आर्यसमाज।
घर-घर से अज्ञान-अंधेरा,
हटा रहा है आर्यसमाज।।
मतवादों पंथों के झगड़े,
मिटा रहा है आर्यसमाज।
जन्मकाल से मनुष-मात्र को,
उठा रहा है आर्यसमाज।।
आर्य समाज प्रेम का प्रेरक,
द्वेष दम्भ का नाशक है।
वैदिक धर्म दिवाकर का यह,
उज्ज्वल ज्ञान प्रकाशक है।।
आर्यसमाज सभी से सब जन,
प्रेम करें सिखलाता है।
आर्यसमाज निर्बल की रक्षा,
उत्तम धर्म बताता है।।
आर्यसमाज गिरे बिछुड़ों को,
बढ़कर गले लगाता है।
आर्यसमाज सभी का साथी,
सबको एक बनाता है।।
प्रिय आर्यसमाज अमर रहे

सूचना

आर्य समाज बिडला लाईन्स कमला नगर दिल्ली-7 का वार्षिक उत्सव आगामी 11, 12, 13 दिसम्बर 2015 को मनाया जायेगा। जिसमें रात्रि 8:00 से 9:00 बजे तक प्रवचन डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री और श्री उदयवीर आर्य (मथुरा वालों) के सुमधुर भजन होगें। सभी धर्म प्रेमी मानुभावों इस उत्सव में सादर आमंत्रित है।

–सुधीर चन्द घई मंत्री

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 06.07.08 मार्च 2016 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर 'टंकारा समाचार' का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 31 जनवरी 2016 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा। इसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

–अजय सहगल, सम्पादक, टंकारा समाचार, ए-419 डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-110024 चलभाष : 9810035658

कुछ तो सोचो

ब्रह्मचारी कह रहे हैं
दस बच्चे पैदा करो
तुम्हारे कितने है तथाकथित
सरकार कानून बनाये
हम अमल में लाये
तुम कौन हो कहने वाले
तुम कैसे कह सकते हो
ब्रह्मचारी होकर
हिन्दुओं की इतनी चिन्ता है
तो आओ हमारे साथ
शादी करो, घर बसाओ
और दस
की बात को अमली जामा
पहनाओ
साधु बने हो
इसलिए मंहगाई, बेकारी
का कुछ पता नहीं
दान का दिया खाते हो
इसलिए उपदेश
बघारते हो
आओ हमारे साथ
हल चलाओ
मेहनत की खाओ
पसीना बहाओं
फिर कहो कितने बच्चे
अक्ल ठिकाने आ जायेगी।
अपने पेट भरने का ठिकाना नहीं
बच्चों को क्या खिलाये
एक-दो तो ठीक है
संतान सुख के लिए
ये दस-दस बच्चे
क्या भीख मंगवायोगे
या अपराध करवायेंगे
कहने से पहले
कुछ तो सोचो।।

– देवेन्द्र कुमार मिश्रा

वैदिक सत्संग समारोह सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के तत्वाधान में वैदिक सत्संग समारोह दिनांक 27,28,29 नवम्बर 2015 को नेहरु पार्क, न्यू राजेन्द्र में सायं 4 बजे से 6 बजे तक उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आ. चन्द्र शेखर जी शास्त्री के प्रवचन एवं श्री दिनेश दत्त जी के सुमधुर भजन हुए।

संघर्ष का नाम जीवन है

संघर्ष का नाम जीवन है,
सुख दुख का यह संयम है।
कुछ का जीवन बना अभिशाप,
कम किये पुण्य अधिक पाप ।। 1।।

कुछ का जीवन बना वरदान,
बिना कुछ किये बना महान ।
लोग प्रशंशा करते उसकी,
चापलुसी करते उसकी ।। 2 ।।

कुछ खाते रहते ठोकरे,
मजाक बनाते छोकरे।
पहनने को कपड़ा नहीं,
रहने को कोई घर नहीं ।। 3।।

भीख मांग पेट भरते,
जीते जी मरा करते।
जरुरते पूरी न हो पाती,
जिंदगी बौझ नज़र आती ।। 4।।

एक पालने में झूलता,
सुख सुविधाएँ भोगता।
महलों में वह रहता,
ठांट बाट से जीता ।। 5।।

यह जीवन बना पहेली,
विधवा हुई नई नवेली।
जीवन बेबसी में गवांया,
बदनामी का डर छाया ।। 6।।

साहूकार को नहीं आँच,
न बोले उसके विरूद्ध साँच।
सच कहने से भी डरते है,
उसके पाप छिपे रहते है।। 7।।

निर्धन डरा-डरा रहता,
जीवन जंजाल बना रहता।
कर्मों का फल मिलता यहाँ,
जैसे किये भोगते यहाँ ।। 8।।

कर्म करने में है स्वतंत्र,
फल भोगने में है परतंत्र।
पाप पुण्य खाली नहीं जाता,
जीवन में फल भोगता।। 9 ।।

नर्क भोगता स्वर्ण भोगता,
दुख भोगता सुख भोगता।
कोई योग से सुख पा रहा।। 10।।

जीवन को न भोग समझो,
बुरे काम से तुम बच लो।
अच्छे का मिले फल अच्छा,
बुरे को मिलेगा फल बुरा।। 11।।

मानव जीवन है अति श्रेष्ठ,
कर्म कर तू भरपूर यथेष्ठ।
गिला शिकवा न कर सेवाराम,
प्रभु को भज ले सुबह शाम।। 12।।

–सेवाराम आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रकाश उत्सव में ऊपर जाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
हीरे को कीचड़ से निकालने वाले – ऐसे दयानन्द थे
वेदों को जर्मनी से लाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
स्वराज सुराज से अच्छा समझाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
पाखण्ड खण्डन पताका लहराने वाले – ऐसे दयानन्द थे
शिव लिंग पर चूहे का अर्थ बताने वाले – ऐसे दयानन्द थे
सर सया को साथ मिलाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
नास्तिक मुंशी राम को आस्तिक बनाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
डंडे से रीछ भगाने वाले, शुद्धि का चक्र चलाने वाले -- ऐसे दयानन्द थे
विरजानंद से मार खाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
हाथ से तलवार तोड़ने वाले – ऐसे दयानन्द थे
दो साँडों को पृथक करने वाले – ऐसे दयानन्द थे
वेश्या को माँ कह कर शरमाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
विश देने वाले को नेपाल भगाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
धर्म में विज्ञान लेने वाले – ऐसे दयानन्द थे
गाली देने वाले को मिठाई खिलाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
पूणे में कला दयानन्द का अर्थ बताने वाले – ऐसे दयानन्द थे
विवाह छोड सन्यासी बन जाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
मूर्ति पूजा से देश की होती हानि रुकवांने वाले – ऐसे दयानन्द थे
पारसी के घर आर्य समाज बनाने वाले – ऐसे दयानन्द थे
लंदन में आर्य समाज न होता, जो भारत में दयानन्द न होते
आयरलेंड के बच्चों का शाँत पाठ न होता – जो भारत में दयानन्द न होते
लेखराम चलती गाड़ी से न कूदते – जो पहले दयानन्द न होते
जामा मस्जिद से वेद मंत्र का उच्चारण न होता – जो पहले दयानन्द न होते
न गुरुकुल कांगड़ी होता न डी.ए.वी. होता – जो पहले दयानन्द न होते
न बाल विवाह रूकता व विधवा विवाह होता – जो पहले दयानन्द न होते
न सत्यार्थ प्रकाश होता न ऋक आदि वेद भाष्य होता– जो पहले दयानन्द न होते
मारीशस आर्य देश न बनता – जो पहले दयानन्द न होते
दस नियमों का पाठ सभी को पढ़ाना चाहिए।
एक ईश्वर और वेदों का संदेश विश्व में छा जाना चाहिए।

–हरबंसलाल कोहली (कार्यकारी प्रधान)

परोपकारी व्यक्तित्वः चौधरी चन्द्रभान

चौधरी चन्द्रभान जी यों तो सद्गुणों की खान हैं, परन्तु उनका सबसे बड़ा गुण है मानवता। चौधरी साहब एक बहुत अच्छे इंसान हैं। इंसान के दुःख को देखकर तड़प उठते हैं। भूकम्प तथा बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए चौधरी साहब ने जो विशेष कार्य किए हैं। उनका अलग से उल्लेख करना आवश्यक है। उत्तरकाशी, लातूर एवं गुजरात में जो भीषण भूकम्प आए, उससे मानवता सिहर उठी। चौधरी साहब ने इन भूकम्प पीड़ितों की मदद के लिए दिन-रात एक कर दिया। कपड़े खाद्य सामग्री एवं रुपये, पैसे आपने घर-घर जाकर एकत्र किये। सार्वदेशिक व प्रादेशिक सभा कार्यालय में जमा करवाये। बिहार, बंगाल में आई बाढ़ो तथा उड़ीसा में आए भयंकर तूफान के समय भी चौधरी साहब के सेवा कार्यों की तत्परता में कोई कमी नहीं आई।

चौधरी चन्द्रभान जी जैसे महात्मा सचमुच धरती पर दुखियों का दुख कम करने के लिए ही अवतरित होते हैं।

सच्चे समाजसेवी एवं मानवता को समर्पित महामानव नींव के पत्थर की तरह कार्य करते हैं तथा उन्हीं की बुनियाद पर मानवता टिकी रहती है। माननीय चौधरी साहब ऐसे ही महामानव हैं जिन्होंने मानवता की बुनियाद के यज्ञ में स्वयं को समर्पित कर दिया है।

आर्यसमाज की अनेक संस्थाओं, कल्याण कोष, आत्मशुद्धि आश्रम तथा परमेश्वरी देवी धर्मार्थ ट्रस्ट भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के माध्यम से चन्द्रभान जी चौधरी रात दिन दीन-दुखियों की सेवा में व्यस्त रहते हैं। गरीब कन्याओं का विवाह करवाना, वृद्ध व बेसहारा लोगों को सहारा देना, गरीबों को चिकित्सा सहायता उपलब्ध करवाना जैसे पुनीत एवं मानवीय कार्य चन्द्रभान जी की दैनिक दिनचर्या के अहम् हिस्से हैं। परमेश्वर से सही प्रार्थना है कि परोपकार की प्रतिमूर्ति चन्द्रभान जी को दीर्घ आयु प्रदान करें। वे 100 वर्ष तक मानवता का कार्य करते रहें।

- हरबंसलाल कोहली

ममतापयी-मानवता की प्रतिमूर्ति - श्रीमती चन्द्रकला राजपाल

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल वैदिक संस्कारों की महिला है। आर्यसमाज एवं मानवता के प्रति हर पुनीत कार्य में आपका आर्थिक योगदान सुनिश्चित रहता है।

आपके दादा भगत श्री कबीरदास मुल्तान के प्रसिद्ध व्यापारी थे। पति श्री वेदराज वेदालंकार सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान थे। भास्कर कॉलेज के संस्थापक श्री विजय भास्कर आपके सुपुत्र है।

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल 18 वर्ष तक आर्य समाज, टेगौर गॉर्डन तथा 10 वर्ष तक आर्य समाज, सुन्दर विहार की प्रधाना रही है। श्रीमती राजपाल "महिला वेद प्रचार मंडल-दिल्ली की 5 वर्ष तक प्रधाना, 10 वर्षों तक मंत्राणी रही है"। ईश्वर आपको शतायु करे।

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी की ओर से शुद्धि सभा को पिछले कई वर्षो से आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। जिसके लिये हम इनका आभार प्रकट करते हैं।

-चन्द्रभान चौधरी (संरक्षक)

-: शोक संवेदना :-

श्री वेदरत्न आर्य जी (मालवीय नगर नई दिल्ली) की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती आर्या जी गत 2.11.2015 को 86 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। इनकी श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज मालवीय नगर में दिनांक 5.11.2015 को हुई जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने उपस्थिति होकर दिवंगत पुण्य आत्मा को अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पुण्य तिथि पर परिवार की ओर विभिन्न संस्थाओं, आर्य समाज, गुरुकुलों को दान राशि प्रदान की गयी। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को भी 10,000/- रु. की राशि प्रदान की गयी। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से दिवंगत पुण्य आत्मा को विनम्र श्रदांजलि।

- हरबंसलाल कोहली (कार्यकारी प्रधान)

नवम्बर -2015 के आर्थिक सहयोगी

श्री सुरेन्द्र आर्य जी, सैक्टर-8, रोहिणी, दिल्ली		2100/-
श्रीमती कौशल्या देवी शारदा रानी जी, न्यू रोहतक रोड़, नई दिल्ली		1200/-
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.-15, फरीदाबाद	मासिक	1000/-
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बंगलौर	मासिक	750/-
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी-महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्री यशपाल आर्य शास्त्री, अशोक विहार फेस-1 दिल्ली		400/-
श्री विजयगुप्त जी 'आशु कवि', मदनगीर, नई दिल्ली		200/-
आर्य समाज कोटला-मुबारक पुर, नई दिल्ली		200/-
श्रीमती रमारानी जी, सरस्वती कुंज सोसाइटी, पड़पड़गंज, दिल्ली		100/-
कु. वन्दना जी, मयूर विहार फेज-1, दिल्ली		100/-
श्री अनिल आर्य जी, हंस पार्क, वेस्ट सागरपुर, दिल्ली		100/-
श्री रविकुमार वर्मा जी, लाइन बाजार, फरीदकोट, पंजाब	आजीवन	300/-
श्री शान्ती नारायण जी कालडा, लाजपतनगर-3, नई दिल्ली	आजीवन	300/-

पुस्तक विमोचन एवं सम्मान समारोह पर एकत्रित दान

श्रीमती उमा बजाज जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	2100/-
श्री राजीव चौधरी जी, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली	2010/-
आर्य समाज नोएडा, एवं आर्ष गुरुकुल नोएडा, सैक्टर-33, नोयडा	1100/-
सुश्री मृदुला चौटानी जी, सैक्टर-40, हुडडा, गुडगांव	1100/-
श्री प्रेमनाथ गक्खड़ जी, विक्रम विहार एक्स. नई दिल्ली	1100/-
आर्य समाज मदनगीर, नई दिल्ली	501/-
आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/-
श्री विजय सब्बरवाल जी, महरौली, नई दिल्ली	250/-
श्री पुरुषोत्तम सहगल जी, शालीमार बाग, दिल्ली	200/-
श्री सी.एल. मेहता जी, छत्तरपुर, नई दिल्ली	200/-
आर्य समाज मोती बाग, नई दिल्ली	201/-
श्री वी.के. अग्रवाल जी, सै.-9, आर.के. पुरम्, नई दिल्ली	101/-
श्री यशपाल आर्य जी, आर्य समाज-बी.जेड., जनकपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री मुकुन्दलाल जी, आर्य समाज सै.-9 आर.के.पुरम्, नई दिल्ली	100/-
श्री ओम वीर सिंह जी, विपिन गार्डन, उत्तमनगर, नई दिल्ली	100/-
श्री सूरज मल सैनी जी, लक्ष्मी पार्क, नागलोई, नई दिल्ली	100/-
श्री सुरेन्द्र नाथ आर्य जी, बी-2ब्लाक आर्य समाज, जनकपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्त जी, आर्य समाज मोती बाग, नई दिल्ली	100/-
श्री एन.एल.वर्मा जी, सैक्टर-8, आर.के.पुरम्, नई दिल्ली	100/-
श्री नरेश कुमार जी, आर्य समाज किदवाई नगर, नई दिल्ली	101/-
श्री विश्व नाथ शास्त्री जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/-

श्रीमती सावित्री शर्मा जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती उमा बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1200/-
श्रीमती बीना बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	600/-
श्रीमती सरोज सहगल जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती पायल जी एवं विजय मिगलानी जी, (विवाह की शुभ वर्ष गांठ पर)	500/-
सुश्री वेद मदान जी, डबल स्टोरी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
श्री भीष्म लाल जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	400/-
श्रीमती ज्योति बहल जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/-
श्रीमती तारावन्ती ढींगरा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/-
श्रीमती कृष्णा आहूजा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/-

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कु. गरिमा जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
श्री चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/-
श्री सौरभ चौधरी जी, जी-ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/-
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, विकास पुरी, नई दिल्ली		50/-
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/-
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/-
डॉ. पुष्पलता वर्मा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/-
श्री विपीन चन्द सरीन, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/-

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-12-2015 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17

सेवा में,

शुद्धि समाचार

दिसम्बर – 2015

'स्वामी श्रद्धानन्द का पावन चमत्कारिक व्यक्तित्व'

–मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द (1856–1926), पूर्वनाम महात्मा मुंशीराम, महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्यों में से एक थे जिन्हें अपने धर्मगुरू के शिक्षा सम्बन्धी स्वप्नों को साकार करने के लिए हरिद्वार के निकटवर्ती कांगड़ी ग्राम में आर्श संस्कृत व्याकरण और समग्र वैदिक साहित्य के अध्ययनार्थ गुरूकुल खोलने का सौभाग्य प्राप्त है। आर्यसमाज के इतिहास में स्वामी श्रद्धानन्द और प्राचीन आदर्शों व मूल्यों पर आधारित शिक्षण संस्था **''गुरुकुल कांगड़ी''** का महत्वपूर्ण स्थान है। हम अनुमान करते हैं कि यदि स्वामी श्रद्धानन्द आर्यसमाज में न आये होते तो आर्यसमाज का इतिहास अपने उज्जवल स्वरुप से कुछ निम्नतर होता। स्वामीजी का 23 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में बलिदान हुआ था। इस अवसर पर उनके महान व चमत्कारिक व्यक्तित्व को स्मरण करना प्रत्येक देशवासी, आर्य व ऋषिभक्त का पुनीत कर्तव्य है। आर्यजगत के विख्यात विप्र संन्यासी स्वामी वेदानन्द तीर्थ तीन अवसरों पर स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आये और उनके महान व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। स्वामी श्रद्धानन्द जी विशयक उनके संस्मरणों को प्रस्तुत कर हम स्वामी श्रद्धानन्द जी की महानता और उनके चमत्कारिक व्यक्तित्व का परिचय इस लेख में दे रहें हैं। आशा है कि पाठकों को पसन्द आयेगा।

स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रथम दर्शन लगभग सन् 1910 में किये थे। उस समय वह महात्मा मुंशीराम जी के नाम से विख्यात थे। आर्यसमाज के महात्मा विभाग वा घासपार्टी के उस समय वह एकमात्र नेता थे। उन दिनों आर्यजगत में उनकी ख्याति पूर्ण यौवन पर थी। **जब स्वामी वेदानन्द जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन किये तो उनकी भव्यमूर्ति, विशालकाय, सुदीर्घ भारीर संस्थान, नग्न सिर, सुन्दर दाढ़ी तथा पीले दुपट्टे ने उनके चित्त पर विचित्र प्रभाव डाला।** इस भेट से पूर्व स्वामी वेदानन्द जी संकोचवश उनके सामने न जाना चाहते थे। वह समझते थे कि वे बड़े आदमी हैं और स्वामी वेदानन्द जी एक नगण्य लघुव्यस्क बालक से हैं। भला महात्मा मुंशीराम उनसे क्यों कुछ बातें करेंगे? स्वामी वेदानन्द जी का अनुमान था कि वह तो उनके अभिवादन प्रणाम–नमस्ते का प्रत्युत्तर भी न देंगे। वेदानन्द जी असंजस में थे कि तभी एक माननीय वृद्ध आर्य सज्जन ने उनसे कहा––**''हे ब्रह्मचारी जी ! महात्मा जी के दर्शन किये।''** स्वामी वेदानन्द जी ने उनसे कहा–**''नहीं, उन्हें भय लगता है।''** वह वृद्ध आर्य सज्जन हंसकर बोले **''बिना देखे डरने लगे हैं। आप मेरे साथ चलिये। डर की कोई बात होगी, तो हम रक्षा करेंगे।''** स्वामी वेदानन्दजी उन वृद्ध सज्जन के उपहास मिश्रित व्यंग्य को समझ गये और साहस करके उनके साथ महात्मा जी के सामने चले गये। ज्यों ही महात्मा जी के उनको दर्शन हुए, उन्होंने तत्काल उनको प्रणाम किया। **महात्मा जी ने बहुत प्रीति से उन्हें नमस्ते कह कर अपने पास बिठा लिया और उनका कुशल पूछकर उनसे बातें करने लगे। महात्मा जी के व्यवहार ने स्वामी वेदानन्द जी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस व्यवहार से वह हैरान थे। बाद में उनकी समझ में आया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व का रहस्य उनका यही गुण था। वह किसी भी मनुश्य को तुच्छ न समझते थे।**

स्वामी वेदानन्द जी ने लिखा है कि वह उस समय आर्यसमाज में नवप्रविश्ट थे। वह अपना भावी कार्यक्रम सोचने की चिन्ता में थे। उन दिनों उन्हें उत्साह एवं भय दोनों घेरे रहते थे। महात्मा मुंशीराम जी के प्रेम भरे प्रथम दर्शन ने उन्हें उत्साहित किया। स्वामी वेदानन्द जी को दूसरी बार सन् 1914 में महात्मा मुंशीराम जी के दर्शन करने का सौभाग्य गुरूकुल कांगड़ी में मिला जो उन दिनों गंगा पार कांगड़ी ग्राम में था। वह गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव देखने वहां आये थे। गुरूकुल पहुंच कर वह सीधे महात्मा जी की गंगा के तीर पर स्थित कुटिया जो उन दिनों बंगला कहलाती थे, गये। उस समय महात्मा जी कार्य में व्यस्त थे। वेदानन्द जी की आहट सुनकर उन्होंने उनके प्रणाम करने से पहले ही स्वयं उनको प्रेम से नमस्ते की। वेदानन्द जी उन दिनों संन्यास आश्रम में प्रविश्ट हो चुके थे। उनके काशाय वस्त्रों को देखकर उन्होंने पूछा 'यह क्या?' वेदानन्द जी ने उत्तर दिया, **'आप ऐसे बूढ़े जब संन्यासी न हो तो अनुपात पूरा रखने के लिए मुझ जैसों को ही संन्यासी बनना पड़ता है।'** उनके इस वचन पर महात्मा जी खिलखिला कर हंस पड़े। बोले––**'भाई ! तुम्हारा उपालम्भ भीघ्र उतार देंगे।'** वेदानन्द जी लज्जावश चुप रहे। महात्मा जी ने उन्हें जलपान करा कर कहा–**'भोजन के समय आ जाना। मेरे साथ भोजन करना।'**

इस दूसरी भेंट पर टिप्पणी करते हुए स्वामी वेदानन्द जी ने लिखा है––**'मैं चकित था। मैं समझता था, तीन–चार वर्श पूर्व देखे हुए एक तुच्छ से व्यक्ति को ऐसा महान् महात्मा कैसे स्मरण रख सकता है। किन्तु देखते ही उनका मुझे मेरे पुरातन नाम से पुकारना, मेरा इतने दिनों का वृत्त पूछना, संन्यासी होने के हेतु की जिज्ञासा––उनकी इन सारी बातों ने मुझे उनका भक्त बना डाला।'** वह आगे लिखते हैं कि **'उस दिन मैं उनके आदेशानुसार भोजन के समय न पहुंचा, मैं कुछ उलूल–जुलूल–सा आदमी हूं। मैं उत्सव–मण्डप में न जाकर गंगा तीर पर जिधर वह जा रही है, उधर ही चला गया। कुछ दूर जाकर मैं एक स्थान पर बैठ गया। मैं भोजन की बात भूल गया। मैं कोई चार बजे लौटा। मुझसे उनके सेवक ने कहा कि महात्मा जी को आज तुम्हारे कारण उपवास करना पड़ा है। मेरी आंखों में आंसू आ गये। साथ ही हृदय में भय का संचार भी हुआ। मैं चला उनसे क्षमा मांगने। जब सामने गया और हाथ जोड़ कर क्षमा मांगने लगा तो मेरे हाथ पकड़ कर कहने लगे––''भाई ! उत्सव के दिनों में ऐसी गड़बड़ न करो।'' मैं चुपचाप उनका मुख निहार रहा था। वहां मुझे कोध, क्षोभ न दीखे। दिल ही दिल में मैंने उन्हें प्रणाम किया। अगले दिन उनका सेवक मुझे भोजन के समय पकड़ लाया। आज सोचता हूं, श्रद्धानन्द की महत्ता के हेतु की घटक ये छोटी–छोटी घटनाएं ही है।'**

– शेष अगले अंक में

हार्दिक बधाई

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के युवा सदस्य श्री देवेश प्रकाश जी शास्त्री का विवाह संस्कार आयुष्मती कविता आर्या जी के साथ दिनांक 24.11.2015 को वैदिक रीति से युवा वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्त्व में लगभग पचासों वैदिक विद्वानों की पावन उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. रामचन्द्र शास्त्री, आ. विरजानन्द दैवकरणी, आ. प्रियव्रत जी, स्वामी लक्ष्मणानन्द, प्रो. देवेन्द्र मिश्र, प्रो. रामभद्र त्रिपाठी आदि विद्वानों ने नवदम्पती को आशीर्वाद दिया। शुद्धि सभा के महामंत्री नरेन्द्र वलेचा, सम्मादक डॉ. कैलाश शास्त्री तथा उप प्रधान आदर्श सहगल ने आचार्य देवेश जी तथा कविता आर्या जी के लिए मंगलकामना की। हरबंसलाल कोहली जी की ओर से भी श्रीमती एवं श्री देवेश जी को शुभकामनाएँ।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं **भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा,** 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। **सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री**